अन्धविश्वास की खाद से बढ़ती बाबों की फ़सल

बाबाओं का सबसे ज़्यादा चमत्कार और शक्तियां भारत में ही पाये जाते हैं। अगर ऐसी ही बातें है तो इन बाआओं की ऐसी शक्तियों के बावजूद देश में गरीबी, गंदगी, अनुशासनहीनता, लालच, भ्रष्टाचार, अंधभक्ति जैसी समस्याओं से जूझ रहा है किन्तु आज तक ये बाबा कभी देश का कल्याण नहीं कर पाये। यदि आप यकिन नहीं कर पाए तो ये बाबा में कोई शक्ति नहीं, कोई चमत्कार नहीं। कहीं आप अपने अंदर ही देखें तो आपके परिश्रम से ही शक्ति तो आप में है, चमत्कार तो आप में हैं। बेवजह ही लोग बाबाओं के चक्कर में पड़े हैं।

इस देश में ढोंगी व पाखंडी बाबाओं का जमावड़ा हो गया है कि जिधर देखो उधर पाखंडी डेरा जमाये हुए बैठे हैं। बाबा, बाबा न रहकर बनियागिरी करने लगे इन्हें अब क्या कहा जाय बाबा या बनिया। धन एकत्रित करने के लिये अब बनियागीरी करने लगे। क्या इन्हें सन्यासी कहा जायेगा? पहले योग और अब बनिया, यानी हर वस्तु को खुद ये अपना व्यापार करने में लग गये। घी, दाल, आंटा, बिस्कुट, चीनी, यानी दवा में भी हर बड़ी से लेकर छोटी बिमारी तक की दवा इनकी दूकान में मौजूद मिलते हैं। हर छोटा से लेकर बड़ा शहर में इनका करोबार चल रहा है और अखबार में अलग से विज्ञापन प्रचार। अब कोई दुकानदार इतने दिनों से अपना व्यापार कर रहा है, उसकी रोजी रोटी बाबा छीन रहे हैं। इन्हें ये सब से क्या मतलब ये तो ठहरे सन्त।

इस देश में ढोंगी बाबाओं की संख्या इतनी है और सबकी सब जनता को लूटने में लगे हैं। ये इतने स्वार्थी हैं कि जनता की मेहनत की कमाई पर बैठकर शान से रह रहे हैं। सन्त कैसे रहते हैं लग रहा है यह बाबा को पता नहीं। बाबा सिर्फ पैसा कमाकर इकट्ठे कर रहे हैं। सन्त की जिन्दगी तो बिल्कुल ऐसा होता है कि बाबा वैसे एक दिन भी नहीं रह सकते। सिर्फ़ गेरूआ वस्त्र पहनने से सन्त नहीं हो सकते इसके लिये त्याग, तपस्या और कष्ट सहना पड़ता है। अगर इतना नहीं भी तो थोड़ा-बहुत भी कुछ ग्रंथों महापुराणों से सीखना चाहिये कि सन्त की जिन्दगी क्या है। आदिकाल में जैसे वाल्मीकी जी तुलसीदास और भी कितने सन्यासी थे जो जंगलों में रहा करते थे, नीचे ज़मीन पर सोते थे और पर्णकूटी बनाकर रहते थे। उनके लिये महलों और धन की क्या जरूरत। उनके लिये तो सब एक समान जहां चाह वहां राह, बाबा के लिये सब बराबर। नये जमाने के इस बाबा के क्या कहने। इन्हें बैठने के लिये

भव्य सिंहासन चाहिये। घूमने के लिये लंबी गाड़ी और ए-ग्रेड बाबा हैं तो हेलिकॉप्टर से कम में काम नहीं चलता। इनके आश्रम तो ऐसे हैं कि शहंशाह भी शर्म के मारे ज़मीन में गड़ जाएं। बाबा सिंहासन पर बैठकर जनता को बेवकूफ बनाकर कमाई करने में लगें हैं।

एक दौर था कि साधु-सन्त मायावी प्रलोभनों से दूर रहकर समाज को सांस्कृतिक व धार्मिक बनाने में अपनी भूमिका निभाते थे। काम, क्रोध, मद, लोभ को त्याग कर खुद का जीवन दूसरों के हितार्थ में लगा देते थे। आज जिन साधु-संतो को हम देख रहे हैं, इनकी लीला अपरम्पार है। सर्व गुण संपन्न इन साधु-सन्तों का न तो कोई चरित्र होता है न ही इनमें कोई त्याग, आए दिन इनकी काली करतूतें दिखाई पड़ रही है। किन्तु इस महा विकसित दौर में साधु-सन्तों के प्रति जनता में श्रद्धाभाव है, जिसको लेकर बाबा जनता को लुटने में लगे हैं।.

आज माहौल ही लोगों ने ऐसा बना दिया है कि बाबाओं का दोष छिप जा रहा है। बाबा के पास बराबर दस-बीस चेला-चेली रहते हैं। आज बाबा आशाराम चर्चा में हैं। इन्होंने अपने गुरूकुल में पढनेवाली अनेकों किशोरियों के साथ बलात्कार किया और इसी की सज़ा भूगतने के लिये अभी जेल की हवा खा रहा हैं। उसके बचाव में भाजपा के मंत्री से लेकर आम आदमी तक सड़क पर उतरे हैं। जनता के अन्दर इतनी अज्ञानता है, कि अभी भी इस बाबा से लोगों का विश्वास खत्म नहीं हुआ है। हिंदुस्तान भर में इनके अनेकों आश्रम हैं, अहमदाबाद, सूरत, इंदौर और जोधपुर का तो किस्सा ही है यह। इनका दिल्ली के बीचोबीच रिज फॉरेस्ट में एक आश्रम है। जंगल में मंगल।

ईश्वर की मर्जी? खबरें आती रही है कि बाबा फलां लोग़ों की ज़मीन पर कब्ज़ा कर लिया, वहां अवैध रूप से आश्रम बना डाला। लेकिन उन पर कोई ध्यान नहीं देता। न जनता, न सरकार। भाई ये बाबा हैं या भूमाफ़िया? यह बता पाना मुश्किल है।

समाज में ऐसे ढोंगियों की संख्या दिन दूनी रात चौगूणी बढती जा रही है। यह चिन्ता का विषय है। दुख की तो बात यह है कि इतनी काली करतूतें सामने आती रहने के बावजूद भी लोग़ों का उनसे मोहभंग नहीं हो पा रहा। वे उनके चंगुल में फंसते ही रहते हैं। सबसे बड़ी मजे की बत तो यह है कि अब लोग ईश्वर की जय नहीं बोलते बल्कि बाबा की जय बोलते हैं। लगता है ईश्वर की शक्ति अब क्षीण हो गयी है। अब उन्हें ईश्वर की कोई जरूरत नहीं रही। इन्हें तो बस बाबा की कृपा दृष्टि चाहिये क्योंकि बाबा स्वयं ईश्वर है या फ़िर ईश्वर का असली दलाल। वह सिफ़ारिश कर देगा तो परमात्मा आंख बंद कर उसकी बात मान आपका काम कर देगा। जब देश में ऐसे बाबा पैदा हो गये हैं तो धर्मप्राण व्यक्तियों को ईश्वर की कोई जरूरत ही नहीं है। आखिर जो आपको भ्रमित कर दे, वही आपका भगवान है फिर वह बाबा हो या नेता।

बाबा को भगवान बना देने में लोगों की अन्धभक्ति ही काम करती है। जो बाबा स्वयं अपनी ही भलाई में लगा हुआ है वह किसी और का भला कैसे कर सकता है? जो खुद लालच से उबर नहीं सकता वह औरों को क्या शिक्षा दे सकता है।

-दीपिका झा
शिक्षा भरती पब्लिक स्कूल
क्लॉस- 12 वीं
एनआईटी फ़रीदाबाद

'ललित गेट' : फ़िर उद्घाटित हुआ भारतीय शासकों का भ्रष्ट चरित्र

पिछले दो हफ़्ते से देश की राजनीति में ललित मोदी और भाजपा के नेताओं के रहस्यमयी सम्बन्ध छाये हुए हैं। इन सम्बन्धों के खुलासों के बाद देश के प्रधानमंत्री को मानो सांप सूंघ गया है। वे एकदम मौन हो गये हैं। 'मुदहु आंख कतहु कछु नाहीं' की उनकी इस योग मुद्रा ने भाजपा के दूसरी और तीसरी पंक्ति के नेताओं को कहीं का नहीं छोड़ा है। वैसे भी एक-दो मंत्री को छोड़कर मोदी जी ने अपने मंत्रिमंडल के लोग़ों को इस लायक भी नहीं छोड़ा था कि वे कुछ कर सकें। वे इतने बेचारे या नालायक समझे गये कि वे अपने निजी सचिवों का भी चुनाव नहीं कर सकते थे। ऐसे समय में जब भाजपा की खूब धज्जियां उड़ रही हैं तब प्रधानमंत्री का मौन प्रमाण हो न हो परन्तु वक्त ने उनकी बोलती बंद कर दी है। या फ़िर मौन भारत के शीर्ष पर बैठे व्यक्तियों की अदा है।

भ्रष्टाचार पिछली संप्रग सरकार के साथ ऐसे जुड़ा रहा कि शायद ही कोई माह बीता हो जब इसके खुलासें न हुए हों। उस वक्त भाजपा की आक्रामकता संसद और सड़क पर देखने लायक होती थी। और एक वर्ष बीतते-बीतते अब भाजपा की हालत देखने लायक है।

विदेश मंत्री शुषमा स्वराज भाषण देने की कला में जितनी माहिर रही हैं उतनी ही माहिर कर्नाटक के रेड्डी जैसे खनन माफ़ियाओं से लेकर ललित मोदी जैसे धूर्त के साथ संबंधों को निभाने में हैं। वे अपने वकील पति और बेटी के मोदी के साथ व्यवसायिक सम्बन्धों को पूरी कुशलता के साथ निभाती जातीं यदि इस तरह के खुलासे न होते। संसद में नैतिकता की दुहाई देने वाली स्वराज कितनी नैतिक हैं यह सामने है।

वसुन्धरा राजे सिंधिया के ललित मोदी से कैसे सम्बन्ध रहे हैं इससे ही स्पष्ट है कि उन्हें पिछली बार के कार्यकाल के दौरान अनौपचारिक तौर पर मुख्यमंत्री ही माना जाता था। ललित मोदी का सितारा विशेष तौर पर भाजपा के नेताओं के उनकी पीठ पर हाथ रखने से ही चमका है। सामंती ढंग से शासन चलाने वाली वसून्धरा राजे किसी भी हद तक जाकर मोदी की मदद करती रहीं। बहुत घेरने और नये-नये खुलासे के बाद ही उन्होंने स्वीकारा कि ललित मोदी की उन्होंने पूरे देश में अंधेरे में रखकर मदद की।

स्मृति ईरानी, पंकजा मुण्डे जैसे मामलों ने भाजपा के 'चाल-चरित्र-चेहरे' की रही-सही पोल और खोल दी है।

असल में इन सब खुलासों और मंत्रियों के आचरण में ऐसा कुछ अनोखा नहीं है जो पहले न हुआ हो और भविष्य में नहीं होगा। पूंजीवादी समाज का जिस तेज़ी से क्षरण और पतन हो रहा है उसमें पूंजीवादी राजनीति का भी ऐसा ही हस्र होता जाता है।

पूंजी का चरित्र ही ऐसा है वह सब कुछ को अपने रंग में रंग देती है। ऐसे में सत्ता के शीर्ष में बैठे लोगों की जिनकी जिम्मेदारी ही पूंजीपति वर्ग के हितों को साधने की है (और वे स्वयं भी पूंजीपति हैं) तो यह हो ही नहीं सकता कि वहां आचरण में भ्रष्टता न हो। भाई-भतीजावाद न हो। पूंजी का रंग न हो। पूंजी का पूरा इतिहास ही धोखाधड़ी, लूटपाट, निर्ममतापूर्वक शोषण और दमन से भरा हुआ है। ऐसे में सिर्फ़ वक्त की ही बात थी कि कब मोदी सरकार का चरित्र उद्घाटित होता। कब उसकी पोल खुलती।

नरेन्द्र मोदी का गुजरात का पूरा काल खण्ड पूंजी के हितों को साधने के लिये किसी भी हद तक जाने का रहा है। उन्होंने उन सभी संस्थाओं को धता वता दी थी जिनकी जिम्मेदारी कानूनी रूप से निगरानी या जवाबदेही सुनिश्चित करने की थी। आज वे केन्द्र में ऐसा ही बंदोबस्त कर रहे हैं कि कानूनों और संस्थाओं को ऐसा बना दिया जाय जहां आज के नग्न पूंजीवाद को कोई दिक्कत न हो। उसकी राह में कोई बाधा न हो। जो वह करे वही नैतिकता हो।

इस लिहाज से देखा जाए तो किसी ने भी कुछ भी गलत नहीं किया। न तो ललित मोदी, न सुषमा स्वराज, न वसुन्धरा राजे, न स्मृति ईरानी, न पंकजा मुण्डे और न स्वयं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी। जब कुछ गलत हुआ नहीं तो फ़िर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी बोले तो क्या बोले। और ऐसे ही बोलना पड़ा तो अगले चार साल में वे बोलते रह जायेंगे। काम कब करेंगे। पूंजी का रास्ता कब सुगम करेंगे?

-नागरिक

तुर्की-ब-तुर्की / मन की बात जुबां पर नहीं ही आयेगी!

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 15 अगस्त लाल किले की प्राचीर से राष्ट्र के नाम संबोधन के लिये सुझाव मांगे हैं।

हमारा कहना है-

- मोदी जी बात तो आपने वही करनी है जो अडानी-अम्बानी जैसे आपके यार पूंजीशाहों के मतलब की है, कहने को कुछ भी कहते रहो। पिछले साल लाल किले से आपके भाषण में बातें जो भी कही गयी थीं, हुआ तो पूंजीशाहों का ही भला। वैसे भी हर महीने आप रेड़ियों पर जो एकतरफ़ा मन की बात करते हो उसका कोई नतीजा इस देश की जनता को तो मिलता नहीं।

- देश के तमाम प्रधानमंत्री 15 अगस्त के मौके पर लाल किले से आम जन के हित की कसम खाते आये हैं। हमने इस एक साल में देख लिया कि आप भी उनसे कोई अलग नहीं। काला धन, महंगाई, स्त्री सुरक्षा, गरीब के बैंक खातों में पैसे जैसे लुभावने जुमले फेंक कर आप तो चलते बने। जनता अब भी इन्तज़ार में अपना सिर धुन रही है।

- लेकिन आपने जब मांग ही लिया है तो कुछ सुझाव हम आपको भेज देते हैं। हमारा पहला सुझाव है कि अर्थव्यवस्था में तेज़ी लाने के लिये काले धन से रोक पूरी तरह हटाई जाय । मनमोहन सिंह और उनसे भी पहले नरसिम्हा राव के राज से ही देश में काला धन इस कदर बढाया गया कि हमारी अर्थव्यवस्था की तमाम गर्मी उसी के दम पर पनपने लगी। अब आपके राज में शर्मा-शर्मी के चलते तरह-तरह के चोर दरवाजे खोले जा रहे हैं। कृपया इन दरवाज़ों को कानूनन सार्वजनिक रूप से पूरी तरह खोल दीजिये।

- हमारा दूसरा सुझाव है कि किसी नपुंसक प्रेमी को भारत का कृषिमंत्री बनाइये ताकि नपुंसकता और प्रेम में असफ़लता के चलते आत्महत्या करनेवाले भारतीय किसानों का सरकार में सही प्रतिनिधित्व हो सके। आपके वर्तमान कृषि मन्त्री राधामोहन सिंह, जिन्होंने किसान आत्महत्याओं के लिये उक्त कारण गिनाये हैं, को अब किसानों का प्रतिनिधि नहीं माना जा सकता।

- हम यह भी सुझाना चाहते हैं कि आईंदा से भाजपा सरकारों में कोई भी मन्त्री या मुख्यमंत्री ऐसा नहीं होना चाहिये जिसने व्यापमं से छोटा घोटाला किया हो या जो ललित मोदी से कम काली हैसियत वाले का दोस्त न हो। अन्यथा देशवासी, विरोधी पार्टियां और मीडिया के लोग इसी तरह शिवराज चौहान, वसुंधरा राजे सिंधिया, सुषमा स्वराज, पंकजा मुंडे, रमन सिंह जैसों के इस्तीफ़े मांगकर आपको तंग करते रहेंगे।

- हम यह भी सुझाव देंगे कि आरएसएस की ओर से जब-तब भारतीय मुसलमानों को पाकिस्तान भेजने की धमकी भरी योजना को अमलीजामा पहनाने पर भी आप कुछ प्रकाश डालें। लालकिले से कृपया यह स्पष्ट करिये कि क्या इस विषय में आप पाकिस्तान से कोई समझौता कर संविधान में संशोधन करने की सोच रहे हैं? या देश में जगह-जगह साम्प्रदायिक दंगे करवा कर हर शहर में ही एक-एक पाकिस्तान बनाने की योजना है?

- आशा तो नहीं है आपके विचार उपरोक्त मुद्दों पर सुनने को मिलेंगे। क्योंकि मन की असली बात तो आपकी जुबां पर कभी आती नहीं।